IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 5, June 2023

नागरी प्रचारिणी सभा काशी का हिन्दी पुस्तकों की खोज एवं संयुक्त प्रदेश के न्यायालयों में हिंदी का प्रवेश कराने में योगदान

डॉ अनामिका सिंह
अस्सिटेंट प्रोफेसर,
ग्राम्यांचल पीजी कॉलेज, हैदरगढ़, बाराबंकी (उ0 प्र0)

नागरी प्रचारिणी सभा काशी एक परिचय

नागरी प्रचारिणी सभा भारत की आध्यात्मिक राजधानी काशी नगरी, जिसे आज वाराणसी के नाम से जाना जाता है, में स्थित एक ऐसा हिंदी सेवी संस्थान है जो ब्रिटिश शासन काल से ही हिंदी के विकास एवं प्रचार प्रसार में संलग्न है। हिंदी हित साधन इसका मूल उद्देश्य रहा है। अपने आविर्भाव काल से लेकर आज तक यह संस्था नागरी लिपि और हिंदी वांग्मय की श्रीवृद्धि में संलग्न है।

"नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना क्वींस कॉलेजिएट स्कूल की पांचवी कक्षा में पढ़ने वाले कुछ उत्साही छात्रों ने किया था जिनका उद्देश्य था एक वाद–विवाद समिति की स्थापना करना । इन छात्रों का दृढ़ संकल्प था कि नागरी– प्रचार उद्देश्य बनाकर एक सभा की स्थापना की जाए और इसी संकल्प के अनुसार 10 मार्च 1893 ईसवी को सभा की स्थापना की गई । इसका नाम नागरी प्रचारिणी सभा रखा गया। उस समय गोपाल प्रसाद खत्री, रामसूरत मिश्रा, उमराव सिंह, शिव कुमार सिंह तथा राम नारायण मिश्रा उसके प्रमुख कार्यकर्ता थे।"[1] इसके पश्चात गर्मी के दिनों में श्री गोपाल दास और श्री रामनारायण मिश्र के प्रयास से सभा में कई अन्य सदस्य जुड़े जिसमें श्री श्यामसुंदर दास जी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

इस सभा की एक महत्वपूर्ण बैठक 16 जुलाई 1893 ईस्वी में हुई। इसी तिथि को इस सभा स्थापना की तिथि माना गया और इसी बैठक में सभा के स्थापना कर्ता के रूप में श्री गोपाल प्रसाद एवं सभा के मंत्री के रूप में श्री श्याम सुंदर दास को स्वीकार किया गया । "सभा नागरी प्रचारिणी सभा ही रहे, इसके स्थापन कर्ता श्री गोपाल प्रसाद माने जाएं । उद्देश्य और नियम परिवर्तित तथा परिवर्धित किए जाएं । सभा का जन्म 32 आषाढ़ संवत 1950 विक्रमी (16 जुलाई 1893 ईस्वी) माना जाए। श्री श्यामसुंदर दास सभा के मंत्री बनाए जाएं।" [2]

सन्दर्भ –

1 हीरक जयंती ग्रन्थ, पृष्ठ संख्या– 3, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।
2 हीरक जयंती ग्रन्थ, पृष्ठ संख्या– 3, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
3 हीरक जयंती ग्रन्थ, राजभाषा तथा राजलिपि, पृष्ठ संख्या– 3, प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।
4 हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास, (पंचम भाग) – भूमिका, प्रकाशक– नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।